का व्यापक प्रसार भी सम्भव है।

4. नाटक और एकांकी

नाटक—नाटक काव्य का वह हिस्सा होता है, जो दर्शकों को रसानुभूति का अनुभव कराता है। नाटक काव्य कलाकारों का एक महत्वपूर्ण अंग माना जाता है जिसमें अभिनय के माध्यम से समाज एवं व्यक्ति के चरित्रों को प्रदर्शित किया जाता है। यह सामान्य रूप से दृश्य काव्य के अन्तर्गत आता है। जिसका प्रदर्शन रंगमंच पर किया जाता है। इसे काव्य का एक अहम् हिस्सा माना जाता है, क्योंकि इसमें कई पात्रों की अहम् भूमिका होती है। नाटक का अभिनय करने वाले किरदारों की भूमिका अलग-अलग होती है। नाटक को आमतौर पर रंगमंच पर आयोजित किया जाता है जिससे दर्शकों को लुभाया जाता है। नाटक का आयोजन करने के लिए नाटक को तीन या उससे अधिक अंकों में विभाजित किया जाता है और प्रत्येक अंक विभिन्न दृश्यों में विभाजित किए जाते हैं। नाटक में किरदारों के चरित्र-चित्रण के माध्यम से दर्शाया जाता है। यह मुख्य रूप से लेखक एवं दर्शक से जुड़ा हुआ होता है। इसके अलावा नाटक का सम्बन्ध निर्देशक लेखक पात्र, श्रोता एवं दर्शक आदि लोगों से भी होता है। जिसके कारण यह लोक चेतना की उपेक्षा से अधिक सम्बद्ध होता है।

नाटक के प्रमुख तत्व—

- पात्र एवं चरित्र-चित्रण कथावस्तु
- देशकाल तथा वातावरण
- नाटक का उद्देश्य
- नाटक का संवाद
- नाटक की शैली
- अभिनय तथा रंगमंच

पात्र तथा चरित्र-चित्रण—अधिकतर नाटक पुरानी घटनाओं पर आधारित होते हैं। नाटक के प्रमुख पात्र को नामक के नाम से जाना जाता है। वह नाटक की कहानी को अन्तिम छोर तक ले जाने का कार्य करता है। किसी नाटक का नायक वह किरदार होता है जो नाटक के फल का एकमात्र उपभोक्ता होता है। इसमें नायक की प्रेमिका या पत्नी को नायिका के नाम से जाना जाता है। पात्र एवं चरित्र-चित्रण मुख्य रूप से उपन्यास के आधार पर अभिनय करते हैं। इसमें पात्रों की मानसिक स्थिति एवं भावनात्मक परिस्थितियों का चित्रण करके उनकी आन्तरिक एवं बाह्य शक्तियों का प्रदर्शन किया जाता है। एक नाटककार मुख्य रूप से तीन प्रकार से चरित्र का चित्रण करते हैं पहला कथोपकथन द्वारा, दूसरा कार्यकलापों के द्वारा एवं तीसरा स्वागत कथन द्वारा।

कथावस्तु—नाटक की कहानी को कथावस्तु कहा जाता है। नाटक की कथावस्तु मुख्य रूप से दो प्रकार की होती हैं। पहला अधिकारिक एवं दूसरा प्रासंगिक। परन्तु नाटककार उपन्यासकार की भाँति कथा वस्तु के विस्तृत चुनाव के लिए स्वतन्त्र नहीं होते। उन्हें एक उचित अवधि में अभिनय करने के लिए कथा सामग्री का उपयोग करना पड़ता है। कार्य एवं व्यापार के दृष्टिकोण से कथावस्तु की पाँच प्रारम्भिक अवस्थाएँ होती हैं। यह अवस्थाएँ कथा के विकास, चरम सीमा एवं समाप्ति कहलाती है।

देशकाल एवं वातावरण—किसी नाटक में देश एवं देश के वातावरण का चित्रण किसी उपन्यास की भाँति ही उपर्युक्त पूर्ण एवं हृदयग्राही होती है। इसके माध्यम से किरदारों के व्यक्तित्व को स्पष्ट रूप से प्रदर्शित

Scanned with CamScanner

किया जाता है। नाटक में मुख्य रूप से युग की संस्कृति, रीतिरिवाजों, सभ्यता, वेशभूषा, रहन-सहन एवं रंगमंच की सभी सुविधाओं का भी विशेष ध्यान रखा जाता है।

नाटक का उद्देश्य—प्रत्येक नाटक में कहानी के रस की प्रधानता होती है। नाटक का उद्देश्य घटनाओं की स्थिति को विस्तारपूर्वक प्रदर्शित करना होता है। यह किसी घटना को आन्तरिक एवं बाह्य रूप से समझाने एवं दिखाने का प्रयत्न करता है। प्रत्येक नाटकों में कोई न कोई उद्देश्य या सन्देश अवश्य होता है।

नाटक का संवाद—प्रत्येक नाटक में संवाद तत्व नाटक का आधार तत्व कहलाता है। नाटक लेखन में संवाद तत्व की एक विशेष भूमिका होती है जिसके माध्यम से लेखक अपनी बात को जनता तक पहुँचाने में सक्षम होता है। नाटक के पात्रों द्वारा बोले जाने वाले संवाद के माध्यम से लेखक अपने विचारों को प्रकट करता है।

नाटक की शैली—एक नाटक की शैली वास्तव में एक प्रदर्शन की शैली को सन्दर्भित करती है। यह शैली मुख्य रूप से रंगमंच के कार्यों को प्रस्तुत करती है। नाटक की शैली कलाकारों को नाटकीय रूपरेखा प्रदान करने में मदद करती है।

अभिनय तथा रंगमंच—अभिनय तथा रंगमंच नाटक के प्रमुख अंग माने जाते हैं, क्योंकि इसके माध्यम से एक घटना को कहानी के रूप में जनता तक पहुँचाया जाता है। अभिनय के चार प्रकार होते हैं-वाचिक, आंगिक, सात्विक एवं आहार्य।

नाटक के उदाहरण—त्रासदी एक प्रकार का नाटक है, जिसमें मुख्य रूप से नाटक की प्रकृति को पूर्ण रूप से वर्णित किया जा सकता है। इस प्रकार नाटक में एक विनाशकारी अन्त को दर्शाया गया है। विलियम शेक्सपियर का प्रसिद्ध नाटक 'रोमियो एंड जूलियट' (Romeo and Juliet) त्रासदी नाटक का एक उदाहरण है।

रोमांचक भी एक प्रकार का नाटक है जो मुख्य रूप से दर्शकों की रोमांचित करने का कार्य करता है। हिन्दी रंगमंच पर समय-समय पर इस प्रकार के नाटकों का आयोजन किया जाता है।

भीष्म साहनी द्वारा लिखे गये 'कबीरा खड़ा बाजार में' नाटक में मुख्य रूप से साम्प्रदायिक दंगों एवं तनाव के बीच की स्थिति को दर्शाया गया है।

'कुतूहल' नाटक में सम्पूर्ण मानव जीवन का रोचक एवं कोतुहल पूर्ण ढंग से वर्णित किया जाता है।

एकांकी

आधुनिक दृश्य साहित्य के अन्तर्गत एकांकी का महत्वपूर्ण स्थान है। इसमें एक ही अंक या विधान किया जाता है। यह अंग्रेजी के One Act Play का पर्यायवाची है। यदि एक अंक जो किसी नाटक की समाप्ति होती है तो उसे एकांकी कहा जाता है। यह एक सर्वथा स्वतन्त्र विधा है, जो पात्र संवाद, घटना आदि के दृष्टिकोण से सीमित होता है। एकांकी या एकांक में मात्र एक अंक ही होता है। आधुनिक कहानी की तरह हिन्दी एकांकी पर भी पश्चिमी का प्रभाव होता है। इसमें नाटक के ही तत्वों को स्वीकारा गया है। फिर भी यह नाटक से भिन्न है। इसमें एक ही अंक, एक ही घटना, मूलभाव, एक ही दृश्य जीवन का एक ही भाग, कार्य, उद्देश्य रहता है।

प्राचीन काल में पश्चिम में बड़े-बड़े नाटकों का आयोजना किया जाता था जहाँ एकांकी के नए दृष्टिकोण को मुख्य रूप से अपनाया गया था। एकांकी में मुख्य रूप से एक घटना होती है, जिसके माध्यम से नाटक को बड़ी कुशलता से चरम सीमा तक पहुँचाया जाता है। इसमें सम्पूर्ण कार्य को एक ही स्थान एवं समय पर पूरा करने का प्रयास किया जाता है।

एकांकी की परिभाषा—डॉ. गोविन्द दास के अनुसार—इसमें जीवन से सम्बन्धित किसी एक ही मूल-भावता या विचार की एकान्त अभिव्यक्ति होती है।

डॉ. रामकुमार वर्मा—एकांकी में एक ऐसी घटना रहती है जिसकी जिज्ञासा पूर्व और कोतूहलमय नाटकीय शैली में चरमोत्कर्ष पहुँचकर उसका अन्त होता है।

एकांकी में एक ही घटना या जीवन की एक ही संवेदना रहनी चाहिए। हर स्थिति में अन्त तक जिज्ञासा बनी रहे। कथा का विकास अत्यधिक तीव्र हो। कथा में यथार्थ का सहज, स्वाभाविक चित्रण हो। साथ ही वह जीवन के निकट प्रतीत हो।

एकांकी में कथानक के पाँच मुख्य भाग होते हैं—प्रारम्भ, नाटकीय स्थल, द्वन्द्व, चरम सीमा एवं परिणति। एकांकी का कथानक मुख्य रूप से इतिहास, पुराण, राजनीति, लोकतन्त्र, चरित्र एवं समाज के माध्यम से लिया जाता है। इसका सीधा सम्बन्ध जीवन की किसी अहम् घटना से होता है।

Scanned with CamScanner

एकांकी में कम से कम संवादों के माध्यम से भावों को व्यक्त करने का प्रयास किया जाता है। इसमें मुख्य रूप से संवाद, परिस्थिति एवं पात्रों की मानसिक स्थिति को प्रकट किया जाता है। एकांकी की भाषा सहज, स्वाभाविक एवं रोचक बनाई जाती है, जिसके दर्शक पात्रों के स्वभाव को आसानी से समझ सके।

एकांकी के प्रमुख तत्व—कथावस्तु, भाषाशैली, रंगमंचीय, देशकाल वातावरण, पात्र एवं चरित्र चित्रण उद्देश्य।

कथावस्तु—नाटक की ही तरह एकांकी में भी कथावस्तु के माध्यम से एक एकांकीकार अपने उद्देश्य को प्रभावशाली ढंग से व्यक्त करता है। कथावस्तु के माध्यम से दर्शक को लुभाया जाता है, जिससे दर्शकों में आगे के दृश्य को जानने की उत्सुकता बनी रहती है। यह वास्तव में कौतूहल को बनाए रखने का कार्य करता है। इसमें कथावस्तु को तीन मुख्य भागों में विभाजित किया जा सकता है, पहला प्रारम्भिक, दूसरा विकास एवं तीसरा चरमोत्कर्ष।

भाषा शैली—भाषा शैली एकांकी का महत्वपूर्ण तत्व माना जाता है, क्योंकि इससे एक समान विषय वस्तु के आधार पर कहानी की रचना एवं काव्य की रचना के माध्यम से नाटक को आयोजित किया जाता है। किसी भी कहानी के लिए भाषा शैली से भिन्न होती है, क्योंकि उसमें किसी भी प्रकार का नाटकीय तत्व नहीं होता। एकांकी की भाषा शैली में पात्र की शिक्षा एवं संस्कृति वातावरण परिस्थितियों के अनुरूप होता है।

रंगमंचीयता—एकांकी के सफल अभिनय हेतु एक उचित रंगमंच साज-सज्जा के साथ कुशल अभिनेता की उपस्थिति अनिवार्य होती है, क्योंकि इसमें एकांकी के मूल उद्देश्य की अभिव्यक्ति का पूरा दायित्व रंगमंच एवं अभिनेताओं के ऊपर ही निर्भर करता है। इसके अतिरिक्त एकांकी के लिए रंगमंच को प्रभावशाली बनाने के लिए प्रकाश का भी उचित उपयोग किया जाता है।

देशकाल वातावरण—एकांकी को नाटकीय रूप से सफल बनाने के लिए संकलन-त्रय को आधार बनाया जाता है। इसमें मुख्य रूप से देश में घटित सम्पूर्ण घटनाओं को अभिनय की सहायता से प्रदर्शित किया जाता है। देशकाल वातावरण में यदि दो घटनाओं में कुछ माह या वर्षों का अन्तर होता है तो उसे एकांकी का विषय नहीं बनाया जाता। इसमें प्रासंगिक कथाओं को शामिल नहीं किया जाता, जिससे व्यापार में क्रमिकता बनी रहती है।

पात्र एवं चरित्र चित्रण—एकांकी में नाटकों के पात्र एवं चरित्र-चित्रण घटनाओं के माध्यम से नहीं बल्कि नाटकीय परिस्थितियों के माध्यम से किया जाता है। एकांकी के चरित्र-चित्रण में मुख्य रूप से यथार्थता, स्वाभाविकता एवं मनोवैज्ञानिकता का विशेष ध्यान रखा जाता है। इसमें प्रत्येक पात्र अपने क्रियाकलापों के माध्यम से दर्शकों को संकेत देते हैं।

उद्देश्य—एकांकी का उद्देश्य समाज में महिलाओं की दशा को सुधारना एवं उनको उनके अधिकारों के प्रति जागरूक कराना होता है। एकांकी मुख्य रूप से उस पुरुष समाज का विरोध करता है तो महिलाओं को समानता का अधिकार देने से रोकता है। एकांकी के माध्यम से एक लेख समाज में फैले रूढ़िवाद एवं कुरीतियों को दूर करने का प्रयास करते हैं। इसके अतिरिक्त एकांकी का उद्देश्य समाज में महिलाओं को पुरुषों के बराबर ही उच्च शिक्षा एवं सम्मान प्रदान कराना भी होता है।

एकांकी के उदाहरण—'दीपदान' एक ऐसा एकांकी है, जिससे बलिदान एवं त्याग के आदर्शों का वर्णन किया गया है। इसमें एक माँ के द्वारा देश के लिए अपने पुत्र का बलिदान करने की घटना को दर्शाया गया है। दीपदान में कम से कम संवाद के भावों को व्यक्त करके चरित्र की दृढ़ता को प्रकट किया गया है।

एकांकी के प्रकार—(i) पौराणिक एकांकी (ii) ऐतिहासिक एकांकी (iii) सामाजिक एकांकी (iv) चरित्र प्रधान एकांकी (v) अर्थपूर्ण एकांकी (vi) राजनीतिक एकांकी।

Scanned with CamScanner